Dr. Sangita Kumari Saha
B.A D-I (S)

Difference between Perception and Sensation.

प्रत्यक्षीकरण और संवेदन दोनों मानसिक ज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ हैं। परन्तु संवेदन को प्रथम सरलतम ज्ञानात्मक व्यवहार या अनुभव कहा जाता है। जबकि संवेदना का अर्थ के योग से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्षीकरण की संज्ञा दी जाती है।

संवेदना को प्रथम सरलतम ज्ञानात्मक व्यवहार कहने से तात्पर्य यह निकलता है कि संवेदना स्वयं ही एक ज्ञानात्मक व्यवहार या अनुभव है तो इसके प्रत्यक्षीकरण में परिणत होने के लिए अर्थ का योग होना कोई महत्व नहीं रखता क्योंकि प्रत्येक ज्ञानात्मक व्यवहार अर्थपूर्ण होता है इसीलिए आधुनिक मनोवैज्ञानिक pure Sensation की कल्पना को एक psychological Myth मानते हैं। इनके अनुसार प्रत्यक्षीकरण ज्ञान और सचमुच के अनुभव का सरलतम एवं प्राथमिक रूप है।

इसका कारण यह है कि वयस्क व्यक्तियों में कभी भी विशुद्ध संवेदना की प्रक्रिया नहीं पायी जाती। हालांकि आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का यह विचार सही प्रतीत होता है फिर भी साधारण एवं जटिल मानसिक क्रियाओं की श्रृंखला को अच्छी तरह समझने हेतु संवेदना और प्रत्यक्षीकरण के सूक्ष्म अन्तर को समझना उचित होगा। अन्तर इस प्रकार हैं—

(1) संवेदना एक सरल मानसिक प्रक्रिया है जबकि प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि संवेदना द्वारा व्यक्ति को उपस्थित उत्तेजना का केवल चेतना या आभास मात्र ज्ञान होता है, पूर्ण ज्ञान का अभाव रहता है लेकिन प्रत्यक्षीकरण में उक्त उत्तेजना को मस्तिष्क में पूर्व अनुभवों के रूप में विद्यमान अन्य विभिन्न प्रतीकों के साथ तुलना करके विभेदीकरण एवं सामान्यीकरण की प्रक्रियाओं द्वारा एक निश्चित एवं सार्थक रूप में बोध किया जाता है। इन प्रक्रियाओं में ग्राहक प्रक्रिया के अतिरिक्त अन्य कई प्रक्रियाएँ जैसे: Symbolization, affective and aesthetic experience एवं एकीकरण की प्रक्रियाएँ होती हैं। संवेदना में केवल ग्राहक प्रक्रिया ही होती है। अतः प्रत्यक्षीकरण अपेक्षाकृत एक जटिल मानसिक क्रिया है।

(2) संवेदना को एक निरर्थक और प्रत्यक्षीकरण को सार्थक अनुभव कहा जा सकता है। संवेदना में केवल उत्तेजना की भौतिक विशेषता जैसे: आकार, प्रकार, रंग, रूप स्पष्टता स्थान आदि का अनुभव होता है।

Ajanta PRODUCTS Officer

Scanned with CamScanner

लेकिन प्रत्यक्षीकरण में हम इन विशेषताओं के अर्थ से सिद्ध हो जाते हैं इसलिए प्रत्यक्षीकरण द्वारा उत्तेजना के सार्थक स्वरूप का अनुभव होता है।

3 वयस्क व्यक्तियों में Pure Sensation नहीं होती क्योंकि वयस्क व्यक्तियों में संवेदना के साथ साथ उपस्थित उत्तेजना के सार्थक स्वरूप का भी ज्ञान होता है अतः मनोवैज्ञानिकों ने संवेदना को abstract और प्रत्यक्षीकरण को concreate अनुभव कहा है। हम अपने व्यावहारिक जीवन में प्रत्यक्षीकरण का अनुभव सदा ही होता है जबकि संवेदना की अनुभूति विरले ही होती है।

(4) संवेदना केवल उपस्थितिकारी होती है लेकिन प्रत्यक्षीकरण उपस्थिति होने के साथ-साथ प्रतिनिधिकारी या प्रतिरूपक दोनों है। तात्पर्य यह है कि संवेदना का संबंध केवल उपस्थित उत्तेजना द्वारा उत्पन्न संवेदी विवरणों के अनुभव से रहता है उससे संबंधित पूर्व अनुभवों से नहीं। परन्तु प्रत्यक्षीकरण में उपस्थित उत्तेजना के संवेदी विवरणों एवं उससे संबंधित पूर्व अनुभवों - दोनों को संगठित करके पूर्ण इकाई के रूप में अनुभव किया जाता है अतः इसमें उत्तेजना के प्रतिरूपों का भी उपयोग किया जाता है।

(5) किसी उत्तेजना के उपस्थित होने पर सभी व्यक्तियों में संवेदना एक समान होती है जबकि उसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण विभिन्न व्यक्तियों में अलग-अलग हो सकता है।

=:=

Scanned with CamScanner